ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 167-168
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

आचार्य कुन्तक और वक्रोक्ति सिद्धान्त

सुरेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर– अयोध्या प्रसाद मेमोरियल, ए०पी०एम०, पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, उझानी, बदायूँ, (उ0प्र0), भारत

सारांश : ***'वक्रोक्ति' की मौलिक व्याख्या प्रस्तुत करने में आचार्य कुन्तक विशिष्ट स्थान के अधिकारी है। इन्होंने वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा के रूप में स्वीकार किया। आचार्य कुन्तक ने काव्य के स्वरूप की विस्तृत विवेचना 'वक्रोक्ति काव्यजीवितम्' नामक ग्रन्थ में की है। काव्य का व्युत्पत्तिपरक अर्थ स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं। "कवे कर्मःकाव्यम्"1अर्थात् कवि का कर्म ही काव्य है। आचार्य कुन्तक की यह धारणा काव्य का स्वायत्तता का उद्घोष करती है। प्रायः आचार्यो ने अपने काव्य विश्लेषण में कवि को और उसके व्यापार को छोड़ दिया है, लेकिन इसके विपरीत आचार्य कुन्तक ने काव्य रचना की प्रक्रिया में कवि स्वभाव को विशेष स्थान प्रदान किया है। उनका सर्वाधिक आग्रह 'कवि–व्यापार' पर है। वास्तव में काव्य कवि के व्यापार का ही फल होता है।***

आचार्य कुन्तक के अनुसार केवल शब्द अथवा केवल अर्थ, पद का अधिकारी नहीं है : दोनो का सहभाव ही काव्य का बोधक तत्त्व है।2 सामान्य रूप में समस्त वाक्यों में शब्द और अर्थ का साहित्य या सहभाव रहता है, किन्तु सब को काव्य नही कहा जा सकता। शब्द और अर्थ का साहित्य विशिष्ट प्रकार का ही अभिप्रेत है : वक्रता के कारण विचित्र गुण अलंकार आदि से युक्त परस्परस्पर्द्धि शब्द और अर्थ का साहित्य ही काव्य है।3

आचार्य कुन्तकने शब्द और अर्थ के समन्वित रूप को अलंकार्य माना है, तथा इस अलंकार्य का एक ही अलंकार है– वक्रोक्ति। वक्रोक्ति को इन्होंने 'वैदग्ध्यभंगीभणिति' कहा है। कवि कर्म की कुशलता ही विदग्धता का पर्याय है। भंगी का अर्थ विच्छित्ति, चमत्कार, चारुता। जबकि भणिति का तात्पर्य–कथन प्रकार है।

इस प्रकार आचार्य कुन्तक का माना है कवि कर्म की कुशलता से उत्पन्न होने वाले चमत्कार के ऊपर आश्रित होने वाले कथन प्रकार को 'वक्रोक्ति' कहते है। वक्रोक्ति को स्पष्ट करते हुए आचार्य कुन्तक लिखते हैं। "प्रसिद्ध कथन से भिन्न प्रकार की विचित्र वर्णन शैली ही वक्रोक्ति है। वैदग्ध्यपूर्ण शैली से कथन (वक्रोक्ति है) वैदग्ध्य अर्थात् चतुरता पूर्ण कवि कर्म का कौशल, उसकी भंगी शैली या शोभा उससे भणिति अर्थात् (वर्णन) कथन करना, विचित्र प्रकार की वर्णन शैली ही वक्रोक्ति कहलाती है।"[4]

उपर्युक्त व्याख्यानुसार :–

(1) वक्रोक्ति का तात्पर्य है :–विचित्र अभिधा। वक्रोक्ति का प्राण भूत तत्त्व वैचित्र्य माना गया है। वैचित्र्य का अभिधात्मक अर्थ है– लोक कथन को साधारण से ऊपर उठाकर काव्यत्व प्रदान करने वाला हेतु। आचार्य कुन्तक द्वारा इसका उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है।

1. शास्त्रादि प्रसिद्ध शब्दार्थोपनिबन्ध व्यतिरेक,[5] 2. प्रसिद्ध प्रस्थान व्यतिरेकि, 3. अति क्रान्तव्यवहारसरणि।

अर्थात् सामान्य मानव अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिस सरल और रूढ़ मार्ग का सहारा लेता है। प्रतिभा सम्पन्न कवि उसका अतिक्रमण कर, पद–संयोजन से अपनी उक्ति या कथन में विलक्षणता उत्पन्न कर देता है। अपनी अभिव्यक्ति की प्रभावशीलता के लिए वह नयी–नयी प्रणालियों का भी सर्जन करता है।

वास्तव में वैचित्र्य का भावात्मक अर्थ है –वैदग्ध्य जन्य चारुता, अर्थात् उक्ति अथवा लोकातिक्रान्त कथन। लोक कथन का प्रयोग भावों और विचारों का सम्प्रेषण करने में होता है। इसमें रस–चर्वणा की सामर्थ्य नहीं होती है।

इस प्रकार सामान्य कथन से भिन्न कवि प्रतिभाजन्य चमत्कार से परिपूर्ण उक्ति ही वक्रोक्ति है। आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति 'वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्य भंगी भणिति' कहा है। इस प्रसिद्ध कथन पर विद्वानों ने 'काव्य मीमांसा' में उद्धृत अवन्तिसुन्दरी की उक्ति8 का प्रभाव स्वीकार किया है।

(2) आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति के अन्तर्गत सहृदयाह्लाद–कारित्व को अनिवार्य उपबन्ध माना है। इसके साथ–साथ विचित्र अभिधा का होना (अर्थात् प्रसिद्ध कथन से भिन्न) वक्रोक्ति के लिए पर्याप्त नही है, और ना ही कवि–कौशल पर आधारित होना वक्रोक्ति की पूर्णता का प्रतीक है। उसमें तो सहृदय को आह्लादित करने की क्षमता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। अर्थात् जो विचित्र उक्ति सहृदय को आनन्द से परिपूर्ण न कर सके वह 'वक्रोक्ति' नहीं है।9 आचार्य कुन्तक स्पष्ट रूप से उद्घोषणा करते हैं–"बिना गढ़े हुये पत्थर के टुकड़े सी लगने वाली मणि के समान, प्रतिभा से प्रतिभा समान वस्तु,

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

विदग्ध कवि रचित काव्य में उपारूढ़ होकर सान पर घिसे हुये मणि के समान मनोहर होकर सहृदयों के आह्लादकारित्व को प्राप्त करती है।" अर्थात् आचार्य कुन्तक की दृष्टि में वक्रोक्ति से केवल शब्द क्रीड़ा अथवा अर्थ मात्र की ही प्रतीति नहीं होती है, बल्कि उसमें सहृदय को प्रसन्न करने की अद्भुत क्षमता अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए।

साररूप में आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति को लोकशास्त्र में व्यवहृत होने वाली शब्दावली से व्यतिरक्त होने के साथ–साथ कवि प्रतिभा जन्य भंगिमाओं से मिलकर सहृदय को आह्लादकारिता प्रदान करें। इसी वक्रोक्ति को आचार्य कुन्तक ने काव्य–सौन्दर्य का मानदण्ड लेते हुए उसे काव्य का जीवित परमार्थ तथा सर्वस्व कहा है।

वक्रोक्ति के भेद :– आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति के वर्गीकरण में काव्यभाषा का आधार ग्रहण किया है। भाषा का सूक्ष्मतम अवयव (रूप) 'वर्ण' होता है तथा प्रबन्ध साहित्य का विशालतम रूप है। आचार्य कुन्तक ने अपने विवेचन में वर्ण से लेकर प्रबन्ध तक सभी को विषय बनाया है, परिणामस्वरूप उनका विवेचन अत्यन्त व्यापक एवं तलस्पर्शी है। इन्होंने सम्पूर्ण वक्रता–साम्राज्य के छः भेद प्रस्तुत किये है। जो निम्नलिखित हैं–

(1) वर्ण–विन्यास वक्रता (2) पद–पूर्वार्द्ध वक्रता (3) पद–परार्द्ध वक्रता (4) प्रकरण वक्रता (5) प्रबन्ध वक्रता

आचार्य कुन्तक के इस वक्रोक्ति विषयक वर्गीकरण की महत्वपूर्ण उपलब्धि विशुद्ध साहित्यिक सिद्धान्त है। यह वगीकरण अत्यन्त सूक्ष्म होते हुए भी वैज्ञानिक है। वास्तव में भाषा का चरमावयव वर्णों तक ही हो सकता है। वक्रोक्ति का प्रथम भेद 'वर्ण–विन्यास वक्रता' है। आवार्य भामह ने वर्ण सौन्दर्य को सभी अलंकारों से बढ़कर बताया है। आचार्य कुन्तक के अभिमत में वर्ण विन्यास वक्रता ही पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा अनुप्रास कही गयी है। इन्होंने 'वर्ण–विन्यास वक्रता' के पाँच भेदों में वर्ण–सौन्दर्य के समस्त उपादानों को समाहित कर एक श्रेष्ठ वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। शब्द की उत्पत्ति में वर्णों का योग होता है, दूसरे शब्दों में वर्णों के समुदाय से शब्द बनता है और यही शब्द व्याकरणिक सम्बन्धों को धारण कर 'पद' कहलाता है। पद के दो भाग होते हैं – प्रकृति और प्रत्यय। अतः आचार्य कुन्तक ने पद में दो प्रकार की वक्रता का विधान किया है। पद के पूर्व में 'पद–पूर्वार्द्ध वक्रता' तथा पद के उत्तरार्ध में 'पद–परार्द्ध वक्रता। पदोच्यय ही कतिपय विशिष्टताओं से मिलकर वाक्य का स्वरूप धारण करता है। इसीलिए कुन्तक ने पद की द्वितीय वक्रता के अनन्तर 'वाक्य वक्रता' को स्वीकार किया है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि कुन्तक की दृष्टि 'वक्रोक्ति–विश्लेषण' में संकीर्ण न होकर उदार और व्यापक रही है। डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त ने उचित ही कहा है– "वक्रोक्ति–सिद्धान्त आचार्य कुन्तक की अदभुत प्रतिभा, व्यापक दृष्टि एवं व्यवस्थित चिन्तना के समन्वय से उद्भूत एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। मौलिकता एवं व्यापकता की दृष्टि से यदि इस 'रीति' अलंकार और 'ध्वनि–सिद्धान्त' से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बता दिया जाये तो कोई अनुचित नहीं होगा।"

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् 1।।2।। की वृत्ति।
2. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् 1।7। पृष्ठ 18 – (न शब्दस्यैव रमणीयताविशिष्टस्य केवलस्य काव्यत्वं, नाप्यर्थस्योति) पृष्ठ 24.
3. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् पृष्ठ 25
4. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् 1 ।।10।। की वृत्ति, पृष्ठ 51.
5. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् 1 ।।7।। की वृत्ति, पृष्ठ 36.
6. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् 1 ।।8।। की वृत्ति, पृष्ठ 64.
7. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् पृष्ठ 430.
8. आचार्य राजशेखर : काव्य मीमांसा (सम्पादक केदारनाथ शर्मा) पृष्ठ 110.
9. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् पृष्ठ 9, 18, 38.
10. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् पृष्ठ 23
11. आचार्य कुन्तक : हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम् पृष्ठ1।।53।। की वृत्ति पृष्ठ 157 तथा 3।।4।। की वृत्ति पृष्ठ 315.
12. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त, पृष्ठ 86.

*****